



गौरव  
गाण

प्रज्ञा प्रकाशन  
कुम्भानगर बाजार,  
चित्तौड़गढ़ (राज०)



निस्पृही निर्भय

निस्पृही निर्भय

प्रकाशक

प्रज्ञा प्रकाशन

बी 52, बाजार कुम्भानगर  
चित्तौड़गढ़-312001 (राजस्थान)

प्रथम संस्करण 1989

मूल्य चालीस रुपये मात्र

भावपूर्ण

अमित भारती

मुद्रक

शीतल प्रिंटर्स

फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता,  
जयपुर-302003

GOURAV GAN

(A Rajasthani Poetry)

By CHAMAN LAL JAIN

Price 40 00

Published by

PRAGYA PRAKASHAN

B 52 Bazar Kumbha Nagar,  
Chittorgarh-312001 (Raj )

या गौरव गाण राजस्थानी आठ खण्ड कथा काव्य री पेसी  
करति देवलोकस्य मातेश्वरी श्री कचन देवी पोरवाल रा श्री चरणा  
मे सश्रद्धा अरपण करु ।

जणा आपणी सेवा, सत्यता, सरलता नै साध्विता ती म्हारा  
हरदा मे कवि रे जोग कोमलता रा ई करुण अकुर उगाया वणा रो  
और कस्तर अभ्यथन करु ।।

जतरो निरमल थारा निरमल नैणा मे मा  
वतरो निरमल नेह ओर कठै ।

नै जतरो पावन थारा पावन सपना मे मा  
वतरो पावन प्यार कठै ।

निस्पृही निभय



# पर्यवेता री केवण

सन् अस्सी रा आखिरसू म्हारा मन मे काव्य साधना मे लागवा री परेरणा जागी । हरदा मे घणी भावना उमडती ही । पण वणा ने उजागर करवा री कोई जोग माध्यम म्हारे पा उपलब्ध नी हो । अणी हालत मे म्हारा मन मे यो भाव आयो के आपणी भावना अणी ढिंगल रा माध्यम तीज आछी उजागर बई सके ।

लिखणी शुरू कीदो जद पेला तो हुणी थकी मन भाई आच्छी कविता जी भूलवा मे आई गी ही पण वणा रा भाव याद हा वणा भावा रा आधार सू वणा ने एक नयो शब्द विन्यास देवा री चेष्टा कीदी ।

आधुनिक राजस्थानी री साहित्यिक मेवाडी-मालवी लहजो हिन्दी रा सब्दा तीज आपणो रूप गरहण करे । जा म्हारी मातर भाषा पण है । आपना स्वाभाविक रूप मे राखवा रीज म्हारी चेष्टा री है ।

क्रिया सरवनाम आद शब्द रूपा मे थोडीक रूप निन्नता आवे है । ने मारवाडी, वागडी हाडोती, दूढाणी, शेखावाटी आद दूजी शैलिया सु पण विण रो मेल है । सिरफ हिन्दी जाणवा वारा रे वास्ते पण या भाषा समझणो घणो कठिन तो शायद नी है । याइज म्हारी माणता है ।

यद अणो परयास ती राजस्थानी भाषा रा विकास मे म्हु म्हारी कोशिश ती कई थोडो घणो भी योगदान करी सकयो तो म्हु चेष्टा ने सफल समझू गा । अणीज विचार ती परेरित बई ने म्हे आपणा लेखण ने यो सब रूप दीदो है । ने अणा हगरी रचनाआरो एक ऐतिहासिक आधार है ।

घणा सद ग्रन्था रा अध्ययन ती पण एक भाव धारा पैदा व्ही । चिन्तन ने जीवण रा अनुभव निष्कर्ष हीज म्हारा लेखण मे सामिल है ।

खास तीर जी हिन्दी मेइज लिखवा मे म्हारो भावरो रचो है । पण हिन्दी मे तो घणा बडा-बडा लिखवा वारा गद्य ने पद्य दोई विधा



म व्या । अणो वास्ते आपणो अणी मातर भाषा मे लिखणो इज म्हे ठीक समझ्यो । ने यो पेलो प्रकाशन राजस्थानी मेइज करावा रो साहस म्हे जुटायो है । भाषा मुगत छन्द मे तुक मिला लिखवा मे इज म्हारी परवरति रो है ।

पच्चीस हजार अभिव्यक्तिया हिंदी मे ने एक हजार करीब मेवाजी-मालवी मे लिखवा रे बाद या पेली लघु पोथी सुविज्ञ पाठका रे हाथा मे पहुचा म्हे एक प्रोत्साहन रोज अपेक्षा राखू हू । यद समुचित प्रोत्साहन मिल सक्यो तो आगलो प्रकाशन हिन्दी मे लिखी कविता रो पण करावा रो समबल म्हेने प्राप्त वेगा ।

म्हे सत्य निष्ठा तोज लिखवा रो अभ्यास राख्यो है । सत्य निष्ठा ती लिखवा सु मन री ग्रथिया सुलभे ने मन मुगति ज्ञान रा मग पे बढ तो जावे । अणीज विश्वास सु म्हे लिखू हू ।

लिखवा मे निस्पृही निर्भय यो म्हारी लेखणो रो नाम है ।

म्हू राजस्थानी डिगल मे एक नई विधा विकसित करणो चाऊ हू । अणी घरती ती जूडियो ब्हेवा रे कारण अणीज रा हपू ता पे म्हारी कलम ज्यादा चाली है । पण म्हू भारत मा रा सगला सपूत आत्म बलिदानी शहीद शूरा ने पूरो समरपित र्यो हू ।

थोडाक समालोचका रो म्हारा लेखण पे यो विचार है के म्हू गध्य रूप मे पध्य लिखवा रो ज्यादा आदि हू । पण या नई विधा गध्य काव्य रो नाम पाइजा तो म्हेने कई एतराज नी है । म्हारे वास्ते या शैली हीज सहज ने सरल है । म्हू ज्यादा क्लिष्टता मे नही पडनो चाऊ । दो पक्तिया मे तुक, ताल मेल बैठावो रो तो म्हे पूरो ख्याल राख्यो है । ज्यादातर रचना हिन्दी मे लिखने अणी शली मे रूपांतरित कीदी है ।

आगलो प्रकाशन म्हारी हिंदी भाषा मे करावा रो विचार है । यद माग री तो वीण रो असो राजस्थानी डिगल रूपान्तरण परकाशित ब्हेई सके । साहित्य कणो भी भाषा रो हगार ब्हेवे है । पण प्रोत्साहन बिने मिलणो पण चावे ।

बस अतरीज बात रै साथै ।

आपरो ईज  
चिमनलाल जैन

या तो धरती धन धन धीरा री



या तो वसुन्धरा बीरा री  
या तो धराहीज रण घीरा री  
या भारत मा रा हपूत हूरा री,  
नै या आत्म बलिदानी बीरा री  
या तो जौहर री आगरा खीरा री  
या तो घरती धन धन घीरा री

रणधम्बोर चित्तीढ खिलजी चढ आयो  
तद ओज शूरवीरा री भडक आयो  
होसलो ठिकाणै दिण री लगवायो  
कर जौहर पदमा आद दिखलायो  
वी बीरागणा नारिया शूरवीरा री  
या तो घरती धन-धन घीरा री

नाची ही या मागा मे मीरा  
मगन ही कृष्ण भगति मे घीरा  
मन री चम चम ही वा हीरा  
या तो भगति मति मोरा री  
या वसुन्धा भोरा भगता हूरा री  
या तो घरती धन धन घीरा री

या तो घरती धन धन घीरा री।

पना आपणो लाल कटायो  
करुणा रो पण लाल वचायो  
मेवाड भीम अभिमान वचायो  
अरे या तो कुरवाणी शूराणी  
या तो वसुधा वीरागण वीरा री  
या तो घरती धन धन धीरा री

राणा रण मे खाण्डा खटकवाया  
शूरवीरा हा भाला भलकाया  
मगरा सू तीर भाटा चलवाया  
अरे या तो तीखा तीखा तोरा री  
या तो वसुधा है रण धीरा री  
या तो घरती धन धन धीरा री

भामाशाह रा भाव जग आया  
राणा री वी सहाय उतर आया  
चरण बढा वो पाछ नो खाया  
या तो मेहत दानी करम सूर रा री  
या तो वसुन्धरा धन वीरा री  
या तो घरती धन धन धीरा री

आगरा राठौर अमरसिंघ धुजाया  
दुर्गे आलमगिर पे भाला भलकवाया  
भू झारा खालडा खुद रा खिचवाया,  
अरे या तो मन राईज अमीरा री  
या तो वसुधरा घणा शूरा री  
या तो घरती धन धन धीरा री

चारण भाट वरदावलिया वाची  
सरवस्व निछावरी भावना राची  
धात या कविजन कंवैजी साची  
अरे या तो है कलाविद घोरा री  
या तो घरा होज घन्यघन वीरा री  
या तो घरती घन घन घोरा री

ढाक पलास नै ई तो बाडा थोरा री  
अरावली पार धार रा घोरा-घोरा री  
कटोली भाडिया रा मोठा वोरा री  
नै नरत हीरी गणगोर गवरो गौरा री  
न या हपूत रण बाकूरा वीरा री  
या तां घरती घन घन घोरा री

मैमाना रै सातर तो या पलक पावडा विछावै  
गुणिया रै स्वागत या मन हो मन मे हरखायै  
दरसनारथी, सरणारथी या कदी नी भटकावै  
वैर भावा सू जी आव वणा इज नै या छटकावै  
नदिया री ढारा ई काछा क्यारिया कीरा री  
अरे या तो घरती घन घन घोरा री

मरुवर नाम हुणता ही डर जावै  
पण शैलावाटी जैपुर आ अड जावै  
मेवाड हाडीती तो हरदा हर जावै  
अरे या तो मोठा मोठा मोरा री  
न या हरो भरी ने गुल-मोरा री  
या तो घरती घन घन घोरा री

नीत हूरजडो वगत पे उग आवै  
मन मे एक नवी उमग जग जावै  
ऊ तो मन हारा रा ही हरखावै  
देवी देवगण देवलोक सू देख देख  
ललचावै या तो है हाचा हूरा री  
या तो घरती धन धन धीरा री

पन्ना री पुत्र बलि





पूत कदी कपूत व्हे सकें पण माता  
कदी कुमाता नी व्हेवं

या बात आज उलटगी, पन्ना यू  
मरत सुत चंदन सू केवै

पूत तो म्हारो सपूत हीज रियो  
मनै'ज कुमाता व्हेणो पड्यो

वचणा री आण निभावा खातर हीज  
विमाता म्हूर्त व्हेणो पड्यो

मेवाड मही रेवै सनाप चाहे म्हारो  
सुख अस्तित्व मिटै

घरती रो कण-कण केवैला क्यू मा सू  
वेटा रो अस्तित्व मिटै

उदय री पराण हान मे तो मेवाह  
राजवश रो बिनास छिप्यो  
बेटा थारा बलिदान मे इतिहास  
गौरव रो रहस्य छिप्यो

घाय पन्ना पुत्र बलि रो मरमावण  
कोई बचि परण कदो नी करो पावैला  
बणी री तो कलमा स्याही दवाता रो  
दीवाळो हीज पिट जावैला

यो स्वामी रा कुल खातर आपणा बेटा रो  
बलिदान कीरो नी केवावैला  
बगत जरत री बंदी पे यो स्वत्व  
ममत्वरो बलिदान महत् केवावैला

सत्ता मुख स्थान रो पिपासु ऊ बनवीर  
तो घणो बदनूमो जालिम हो  
बेरोक-टोक राखो बणवा सार यो  
घोर पाप करम हीज लाजिम हो

स्वतन्त्रता रा प्रचण्ड पुजारी परताप  
पितर, यो तद बे-मालूम हो  
पन्ना पुत्र बलि देई नै बचायो जदीज  
न्है सबयो यो मात्तूस हो

वनवीर तो करुण कातील सत्ता लोलुप

सदा ही केवावैलो

अणी रै पेलां पण वणी उदय भ्रात

विकरम रो प्राण हरण करवायो हो

विण जघन्यती उदय ने पुत्र बळि दे

पन्ना हीज वचायो हो

इतिहास री या एकज मीसाल

असो कदी पैसा पछे नी व्है पायो हो

जणी वगत पन्ना पुत्र चन्दन रो माथो

घड ती अलग करवायो हो

वणी'ज वगत वीण रो मानवता पे

घणो भारी रिण चढ आयो हो

कई कदी वा अणी रिण ती उरिण पण

व्है पावैला

अणी तरु ऊ किण मा रो ममत्व पुत्र रो

सर कलम करावैला

चितौड री पावन धरा पुण्य पन्ना

पौरुष रा गीत गावती जावैली

अणी बलिदानो गीत री गाथा अेक

पीढी दूजी नै सदा सुणावैली

हर वगत सत्ता लिप्ता रा वनबोर

हर जगा नजर आवै है

पण पना पौरुष री कमो हीज

कवि अक्सा मे नीर भर लावै है

हल्दी घाटी रणथली



धन्य धन्य व्है वा तो महा धन्य व्हैगी  
 हे या पावण व्हैई माटी  
 बलिदानी चतर बेटक सा घोडा री टापा  
 बेवसी मे इज ई ने हो पाटी  
 मोणा, भोल, राजपूत, पठान वगैरा सगळा र  
 सगळा व्है अक जूट पड्या  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्हैगी ही हळदीघाटी

वरसात री पैली तेज वोछार पड चुकी हो  
 तरवतर व्हैगी ही मातर धरा री माटी  
 दिहाडो हो इक्कीस जून पन्द्रा सो छियोतर  
 परलयकर लडाई व्ही ही हळदीघाटी  
 कविया रा कौमल कलित कलेवर मा भा  
 छा गई वा रगत रजित व्हैई माटी  
 परताप रा शौर्य त्याग पुण्य राष्ट्र भक्ति र साथ  
 व्है आई यादगिरी हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्हैगी ही हळदीघाटी



ਵੀ ਸਗਲਾ ਰਾ ਮਗਲਾ ਮੇਵਾਈ ਜੋਧਾ ਹਾ  
 ਜੀ ਸਗਲਾ ਮਿਲ ਪੀਲ ਪਛੁਆ  
 ਸਤਰੂ ਰਾ ਮਾਧਾ ਸੀਨਾ ਪੇ ਵਰਸ ਦਾ ਆਦਨ  
 ਤਿਸਰਾ ਹੀਜ ਹਾ ਤੀਰ ਪਛੁਆ  
 ਗੋਫਲਾ ਸੁ ਭਾਟਾ ਮੀ ਹਾ ਮਧਾਨਕ ਨੈ  
 ਵੀ ਹਾ ਭਰਪੂਰ ਪਛੁਆ  
 ਭਰ ਭਾਗੀ ਮੁਗਲ ਫੀਜ ਭੂਲੀ ਨੈ ਸਗਲੀ ਹੋਸ  
 ਤਜ ਦੀ ਹੀ ਹੁਲਦੀਧਾਟੀ  
 ਗਰੁ ਗਰੁ ਗਰਿਮਾ ਗੀਰੁ ਮਛਤਾ ਹੀਜ ਵਾ  
 ਵੇਗੀ ਹੀ ਹੁਲਦੀਧਾਟੀ

ਵਾਧਾਭ ਮਧ ਤੀ ਭਾਗੀ ਮੁਗਲ ਫੀਜ ਸਜ  
 ਤੈਧਾਰ ਵੈ ਦੁਬਾਰਾ ਵਾ ਪਾਈ ਭਾਈ  
 ਹੁਣੇ ਅਕਬਰ ਭੇਜੀ ਧਰੀ ਸਾਰੀ ਕੁਮੁਕ  
 ਭੀਰ ਪਾ ਵਾ ਲੈ ਨੈ ਭਾਈ  
 ਅਵੇ ਪਾਲੀ ਪਛੁਆ ਵਾਕਾ  
 ਮੇਵਾਈ ਸੂਰ ਸਰਦਾਰਾ ਤੀ  
 ਰਗਤ ਤੀ ਵਾ ਲਾਲ ਤਰਾਈ ਭਰਗੀ ਨੇ ਵਾ  
 ਸਾਰੀ ਰੀ ਸਾਰੀ ਹੁਲਦੀਧਾਟੀ  
 ਗਰੁ ਗਰੁ ਗਰਿਮਾ ਗੀਰੁ ਮਛਤਾ ਹੀਜ ਵਾ  
 ਵੇਗੀ ਹੀ ਹੁਲਦੀਧਾਟੀ

चमचमाती तलवारा वी वेसुमार वार  
 चम चमा चम चमक रिया हा  
 माथा कट-कट ने गाजर मूळी री तरा  
 घरा पर गिरी रिया हा  
 ई तो जालम हमलावर दुस्मण है  
 अणा पे दया रो तो कई काम नी  
 लासा तीज पटण्यो पूरो मैदान  
 ने वा पूरी री पूरी हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्हेगी ही हळदीघाटी

मात्र भीम सस्कृति ने स्वतन्त्रता रक्षा  
 खातिर हीज यो बुगल वाजियो हो  
 परताप रा पवितर पौरुष रो तो उठीनै  
 यो सिंघनाद गु जियो हो  
 मुगल सेनापति उ खड्ड मानसिंघ  
 माथो तो आपणे आप खुजियो हो  
 यू व्यो हो यो दुरघर युद्ध ने वा ठावी  
 व्हेगी ही हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्हे गी ही हळदीघाटी

अवे परताप आगे बढ़ने चेटक भट मुगला रा  
 हाथी पे चढ़वायो  
 वचग्यो अकबर सुत सैख सलीम  
 चिस्ति पण मानसिंघ डर धवरायो  
 पडग्यो हो भालो होदा पे पण ऊ पण  
 चर भर करिने चरमरायो  
 विण रा इण विकट विकराल युद्ध ती तो  
 उण दिन सहम उठी ही हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज या  
 व्हैगी ही हळदीघाटी

पछे मुगल सैनिक भपट भट बढ  
 परताप ने धर लियो  
 दुरभाग सू वणीज बगत चेटक रो  
 लगडो पाछलो पैर वियो  
 तद रकसक भाला मान राज चिह्न  
 चवर छतर आपणे माथे डेर लिया  
 निकार ले गयो चेटक वणा रे सुरकसत  
 जदोज छूट सकी ही हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज या  
 व्है गी ही हळदीघाटी

बठे इज भोजूद रुठियो भाई सक्तिसिध  
 जाता चेटक परताप ने पैचाण लिदा  
 बडा भरात रो सुहारद स्वाभिमान आदर्स  
 बिण और बारीकी सू जाण लिदा  
 पाछो करता दो मुरासानी मुगल सैनिक  
 निपट लेणा मन ठाण लिदा  
 भगजो चेटक मग आयो वरसातो नारो  
 कूद ग्यो यो देख री हो हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 न्है गी ही हळदीघाटी

यणीज नारा पे पीछ बिण ठीठक्या ने ललकार  
 पेल्या तो दाया रा माथा काट लिदा  
 फेर पार कर गई लम्बी डेर दी रुको नीला  
 घोडा रा सवार रुको चित्त उच्चाट दीदा  
 रुक्या परताप रे सागे पहुच तन मन मस्तक  
 सब चरण मे हीज हा पाट दीदा  
 माफी दे दो तात यो भाया रो पाछो मिलण नजारो  
 मौन निरख री ही हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 न्है गी ही हळदीघाटी

घायल चेटक रो रुकता ही आपणा  
 प्राण पखेरु त्याग दीदा  
 राणा रे विण शहीद पसु साथी वणारी  
 आखा मे अविरल आसू छाग दीदा  
 दोया भाया मित आखरी किरिया कलाप कीदा  
 पण वी मन वणा रा उच्चाट दीदा  
 चेटक समरति अठैज व्हई निरमत  
 वटा सू दूर नी हो हळदीघाटी  
 गर गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्है गो ही हळदीघाटी

वणा डेढ लाख पे ई बाईस हजार वीर लडाका  
 पार नी पाया  
 पण यो जन युद्ध तो व्यो भयानक जिण रो कीरत  
 सब वेता आया  
 अवे वीर वी यो दगल छाड तो विखर गया  
 पणहारी नै हिम्मत नी घाया  
 परणवीर आखरी जीत थारी वा तो यू इज  
 गुज रो ही हळदीघाटी  
 गर गरव गरिमा भीरव मण्डता हीज वा  
 व्है गो ही हळदीघाटी

लगभग पाच हजार सूर लडाका कट मरिया  
 पन्चीस हजार हमलावारा ने काट दीदा  
 समरथली रा स्थान तो शूरमाँ सतरू सैनिक  
 सवा तीज हा सम्पाट दीदो  
 देख ने यो नजारो मुगल सेनापति मान तो  
 हाथा सू पीट नीज रा ललाट लीदो  
 वीरा रा मुलक पे हमलो देख लिदो फल्यो कस्यो  
 सवाल यो इज गू जा री हो हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्है गी ही हळदीघाटी

वगत हीज कदी कदी कणी रो बलवान व्है जावे  
 हूणो पाठक प्रियवर साथी  
 मा हमलावर अकबर री फौज दादा बाबर सू  
 कई गुणो बडी नै ही घणी मदमाती  
 दगो दियो बिण तुरक राजा सगराम नै  
 फानवा मे पण हारणो पडयो हियारा ती हाथी  
 वणीज मुद्ध छल रो बदलो गिण गिण ने चूकगी  
 आज या लडाई हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्है गी ही हळदीघाटी

पुरातन नेता स्वामी वसज भाई सगा पै  
 हाथ उठाता सरम आवे ही  
 गैरत छनिक अवे पण वाकी ही वाईज  
 नै रै नै याद पण आवे ही  
 नै सहन्साह अकवर नै पण अवे भरोसो  
 तो अणा रो र्यो हो कोनी  
 अणोज रयाल ती पाच्छा बुला लीदा जग ती  
 जद हल्की वी ही हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्है गी ही हळदीघाटी

अवे वीर वी कर गुरिल्ला युद्ध री तय्यारी  
 वणोज मे वी भू भू पड्या  
 साह अकबरी फौज कठै वा मगरुरी स्यान  
 खावा पीवा रा तक लाला पड गया  
 नया नया सिपे सालार भाया वणा खल खवीसारा  
 तो खेमा पण लूटी गया  
 वणा नै लूब छकाया मेवाडी सूर सरदारा  
 समरति अकमय वी हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्है गी ही हळदीघाटी

पण लडता-लडता परताप रा पण सगला रा सगला  
खाली खजाना व्हे गया

एक वगत असो पण आयो जद स्वजन प्राण  
अन्न रा पण लाला पडी गया

तद बनी धीर दानवीर भामासा आपणा  
पुरवजा रो भरजित सगळो कोस हवाले करी गया

ससस्तर सैन्य दल बल फेर व्या गठित  
चप्पा-चप्पा फेर व्हे गी हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज या  
व्हे गी ही हळदीघाटी

परलोक गमण सु पैला पायल चितोड छोड  
सब गढा पै पाछो अधिकार जमायो

मुगल फौजी तो जठं जठं भी हा घणा नं तो खोज  
खोद खदेड बुरो विस्मार करायो

महाण भुगल समराट रा मानस ने कर मजबूर  
स्वतन्त्र सत्ता स्वीकारवाने तैयार करायो

दिग दिगान्त मे मेवाडी धीर वीरा री गाथा फैलगी  
अणीज सु याद आवेली हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
व्हे गी ही हळदीघाटी



या आकरामक सामराज साह सु सवतन्त्रता  
 देश परेम मतवारा री लडाई ही  
 भूल्या आपणा अतीत गौरव ज्ञान वैभव स्वाभिमान  
 वणा सवारथा री पण या सगाई ही  
 महान राष्ट्र रा निजी महत्वाकाक्षा सुख सवारथ  
 भोगरत घटका री नी या वेहयाई ही  
 भोग पसुपण भय हीज दासपण घन घोर अन्धकार  
 जलती मसाल वणी हळदीघाटी  
 गर गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्हे गी ही हळदीघाटी

नरत धूट अधम जी कै व्हे राणा रणथळी  
 हलदीघाटी १ हार गया  
 वदी या पण सोची कस्यो परवल सतर कतरा  
 परवल वेग सु प्रहार किया  
 मुगल समराट महाण रा मनमूवा लगातार  
 कतरा प्रगर सोय सु सहार किया  
 परवल कवि वरद तो योर्दज मानतो आया  
 कीरत अमर वरदी हळदीघाटी  
 गर गरव गरिमा गौरव मण्डना हीज या  
 व्हे गी ही हळदीघाटी

आतम रक्षात्मक लडाया राष्ट्र घणी लडी पण  
 याईज राष्ट्रीय भाव वैभव मीसाल वणी  
 पराधीन काल याईज स्वाधीनता संग्राम री भावना  
 बढ चढ नै घणी विसाल वणी  
 हमलावर लुटेरा, ठग, हिंसा सव्ज बगीया  
 बद सु बदतर नै बदहाल वणी  
 अखण्ड भारत भावी संग्राम निस्पृही निभय  
 प्रेरणादायक निसाण वणी हळदीघाटी  
 गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा  
 व्है गी ही हळदीघाटी



हिन्दवाणी मायड री गैरत रो लाड



નોલમ રા બાજોટા નૈ સોના રી પરાતા મે  
 પટ્ રસ જીમણ જી મનવાર વના લેતા કોની  
 વી રાજ વસ ઘર આજ તરસે રહ્યા સૂકા  
 ટુકડા તક યા વાતડ પણ મ્હાં કરતા કોની  
 પણ યો હિયો ફાટ અવ તો છિદ છલની વ્હૈ જાવે  
 યા વાતડ અવે મુલ્હડા મે ટીક ની પાવૈ  
 કર્દિ આછો વ્હૈ તો વ્હૈઈ દીન હીન દુલ્હિયારી  
 ફણ હિન્દવાણી મા ગૈરત મ્હી પણ  
 અતરો લાડ લડાતા કોની  
 અતરો પ્યાર કરાતા કોની

મુણતા હી પાથલ રી યા વાતડ વણી  
 ધોર ધીર ભામા રો તો વો હિયો ભર આયો  
 સાથ સાથ પીઢી રો સચિત સગલો કોય  
 સમરપણ કરવાયો આપણો ભાવ જતાયો  
 પચ્ચીસ હજાર સૈનિક ધારા વરસ  
 ગુજારા રો પરવઘ તો અવે મારે તી આયો  
 મ્હી તો ઘણા મટક્યા રાવ નૈ સોઘણ નૈ  
 અવે અણી કુ વગત તો લાપરલો  
 મનવાર મ્હી વરાલા કોની

कई आछो बहै तो बहई दीन होन दुखियारी  
इए हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण  
अतरो लाड लडाता कोनी  
अतरो प्यार कराता कोनी

पण मेवाड रो दीवाणी तो था अणीज  
पीढी मे पाई हो अतरो धन साधन  
यां कठा सू लाया

अलवर छोड नै जद म्हा आया हा म्हाणी  
सचित्त धन वभव पण म्हाँ सगलो  
हण्डे लाया हा

ऊ कद कणी विपद मे काम आवैला  
अरज यायज तो म्हा रावराती  
करवा नै आया

योजना वणी ससस्तर म य दल बल  
फर व्या भैरा लापरलो बात तो  
म्ही पण कराला कोनी

कई आछो बहै तो बहई दीन हीन दुखियारी  
इए हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण  
अतरो लाड लडाता कोनी  
अतरो प्यार कराता कोनी

अबै हताश मेवाडी वणा शूरवीरा रा  
बी हिया पण फेर भर तडग पडी  
बारूद सा मडक आया

जग लागी तलवारा रे तक पाछी करवाण लागी  
जो केवो तो सगळो रो सगळो म्हा  
करवा नै आया

ने म्ही सगळा रा सगळा म्हाणा सारा रा सारा  
 प्राण मन फेर पाछा अरपण  
 निछावर करवा नै आया  
 सगला मुगल ठिकाने तैहलको मचग्यो  
 जी पायल री मार रो भय तक  
 अवे खाता कोनी

कई आछो व्है तो व्हैई दोन हीन दुखियारी  
 इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण  
 अतरो लाड लडाता कोनी  
 अतरो प्यार कराता कोनी

परलोक गमण सू पैला पायल चितौड छोड  
 सगला गढा पै फेर पाछो अधिकार जमायो  
 मुगल सैनिक भटै-भटै पण हा वणा नै तो  
 खौज खोद खदेड बुरो बिस्मार करायो  
 अणी जगती नै वणा मेवाडी सौय वीय रो  
 लगातार पाछो आछो अवभाण करायो  
 दिग दिगान्त मे वणी पुण्य परताप री गाथा  
 फैलगी निस्पृही निभय लापरली  
 कविता तो करैला कोनी

कई आछो व्है तो व्हैई दोन हीन दुखियारी  
 इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण  
 अतरो लाड लडाता कोनी  
 अतरो प्यार कराता कोनी

भामा ! थारा धन दान ध'य ध'य हो गयो  
 मा हिन्दवाणी री लाज वच गई,  
 तगडा दुस्मण री वा गाज टल गई  
 कई व्है तो अणी हिन्दवाणी भायड नै  
 राजा वस री गैरत रो येह घणो आछो  
 बीदो जो या आण वच गई



जुग जुगान्तर तक जन जन थने पूजेला  
 हिन्दवाणी रा जाया री तो जा  
 लुट चुकी हा वा स्यान वन्च गई  
 ता परलय यो राष्ट्र थारी दानवीरता  
 याद राखेला थारा चरणा में भुक्क्यो  
 यो माया ता पाछी उठेला कोनी  
 कई आछो व्हे तो व्हेई दोन हीन दुखियारी  
 इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण  
 अतरा लाड लडाता कोनी  
 अतरो प्यार कराता कोनी

या तो म्हा पण भा-यो कै हर मनख  
 धनी धीर दानवीर भामा साहनी व्हे सके  
 पण कई ऊ आपणी मातर भोम समाज नै  
 मनख पणा री ओकात रै वास्ते तनिक  
 त्याग आत्म बलिदान पण नी ऊ करी सके  
 नै आपणी कौम री बहतरी नै गौरव रै वास्ते  
 कोई सोम पुरुसाथ पण नी ऊ धरी सके

परण वीर परताप नै दानवीर भामासाह  
 हरी री अपेक्षा तो दायित्वहीन घृष्ट  
 लीलुष नै अणाती जुडिया अणा  
 तस्करा सु तो म्ही कराता कोनी

कई आछो व्हे तो कई दोन हीन दुखियारी  
 इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण  
 अतरो लाड लडाता कोनी  
 अतरो प्यार कराता कोनी

राजसिध चचला ब्याव



मुगल बगत ही दिल्ली सु चाल एक  
बिसातिम रूप नगर आ जावै है  
साथे बणी रै घणी खरी तसबीरा पण वा  
आ राज महला मे रक् जावै है

राठौर विक्रम सिंघ अठै राजा हा नायिका  
चचला अणारीज राज कुमारी ही  
जिए रा सुकोमल रूप लावण्य री चारु  
दिसा मे चरचा भारी ही

बिसातिम राज महला मे तसबीरा  
सारी दिखलावै है  
पण मुगला री तसबीरा वा पैली पैल  
हीज बतलावै है

सहेलिया सम्भेत चचला ई तसबीरा  
देखती जावै है  
पण मुगला री तसबीरा ती तो वा  
खिन्न जरा व्है जावै है

नै श्रीरगजेव री तसवीर रै तो वा  
ठोकर पण एक लगावै है  
वीर राजपूत कवरा री तसवीरा दिखावारो  
आदेस बीनै दिवावै है

अणी पै वा जयसिंघ जसवन्तसिंघ  
वगैरा री तसवीरा दिखलावै है  
देख वणा नै वा आपणा मन री बात व्है  
बेहिचक यू जतलावै

अणा नै तो भू मुगलां राईज आज्ञाकारी  
सेवक जाणू हू  
वा तो सिरफ एक सवतन्न राजपुरस तसवीर  
लेवणी चावै है

पछै उदैपुर राजा राजसिंघ री तसवीरा रो  
अनुदेस बीनै फरमावै  
पण बिसातरण तो वणा नै बिगारा पिता रा  
सतरु वैणा जतलावै

राणा कणी रा सतरु नी बी मानव मान  
भरजादा रा रक्षक है  
वणारीज वा तसवीर खरीदेली यो स्पष्ट  
तक्ष जतलावै है

नै पछै वा राणा री तसवीर खरीद  
मन ही मन इठला जावै  
बिसातिण री तो बठ घणी खरी और  
वस्तुआ पण घणी बिक्जाव

कालान्तर मे याईज दूती विसाविण फँर  
दिल्ली लौट आ जावै है  
चपल चचला रूप लावण्य री चरचा  
औरगजेब सु और चलावे है

वा कैवे राज कुला मे इण म्हु तो जाऊ हू  
नै आऊ हू

पण चचला सरीरो तो रूप लावण्य म्हु  
और कठैई नी पाऊ हू

सुण यो रूप लावण्य रो बख्ताण फँर,  
औरगजेब और ललचा जावै  
नै विकरम सिंघ नै विने विण री वेगम  
वणवावा रो सन्देसो भिजवावै

सुणी नै यो साही फरमान अबै राजकुमारी  
चचला घबराई जावै

राजा राजसिंघ नै भट आले जावा रो  
वा सन्देसो भिजवाव

औरगजेवी अरमान पुरो ब्हे जावो रो आपणो  
भय भी वा बतलावै है

भट आ लै जा व्याव रचावा री अरज  
विनय सु वणान कर ब्हावै है

औरगजेब पण बरात रूप एक बडो लस्कर लै  
रूप नगर री ओग बढ जावै

जाण अणी बात नै राणा राजसिंघ अवरोध  
वणो भट करवावै

सरदार चुण्डावत रै साथे एक घुड सवार दल  
आगे भट वढ जावै है

औरगजेवी लस्कर रो रस्तो वो एक तग  
दर्रा रा नुक्कड पै रोक थम जावै है

वणीज बगत राणा राजसिंघजा चचला नै  
रूपनगर सु उदैपुर ल आवै  
बडी धूमधाम बठैईज बिण सु ब्याव पण  
वो कुशल नेम सु रचवावै

नै बठै चुण्डावत औरगजेव नै बिण तग  
दर्रा रा नुक्कड पै उलभा देवै है  
बिण रा सव हौसला पस्त बी वीर युद्ध  
क्षेत्रमे प्राण निछावर करा देवै है

चचला राजसिंघ ब्याव चरचा सुण औरगजेव  
और खफा व्है जावै  
एक भारी फौज ले ऊ जालिम अवे उदैपुर पै  
भी चढ आवै

पण अरावली रा मगरा मा ऊ राजसिंघ सु  
बुरी तरै पीट जावै हे  
खुद री बेगम बेटी बठैईज छोड ऊ  
प्राण बचा भग जावै है

जणानै चचला सहेली बत बणा राज महिला  
मा रक्खा लेवै

नै सचि व्हैवा पै सन्मान सहित पाछी  
औरगजेव नै पोंछा देवै

घन्य घय वी वलिदानी वीर राजपूत  
जी एक अबला रा परित्राण विया  
भारत री क्षत्रिय गरिमा रा वी और एक  
नया हीज उत्थान विया ।

नै निस्पृही निभय रा अन्तर ती ई  
कथा काव्य वसाण विया  
क्षत्रिया री गरिमा रा ई असर तो  
सगळा री रग रग मे रमजावै है

राजसिंघ सहघर्मिणो वण चचला  
जीवन सफल कर जावै है  
नै भारत रा गौरव री गरिमा वण वा  
इतिहासा सु जुड जावै है





क्रिषणा री कुरबाराणी



या केणी एक आत्म बलिदानी वाला री  
जिने कवि कलम समरपित व्हेगी  
कहणा ती व्हेई तर वतर विचार भाव भाषा  
सगरी विनै ईज अरपित व्हेगी

याद आईगी वा राज कुमारी क्रिसणा  
जा वधु वणता वणता विप प्याली पी लै सोडू गई  
करीगी सवस्त्र निछावर स्व कलित कनेवर  
नै वणी कुवगत नै पण वा रेतो रै छोड गई

ऊ तो आत्म बलिदानी नी जिने सिकार  
अस्त्रा रो वणायो ग्यो व्हे  
व्हीने किएरो आशीर्वाद पण नी करम फल  
हीज जद चरवायो ग्यो व्हे

जो खुद नो ग्यो व्हे बलिदान  
बलिदा बकरो वणायो ग्यो, व्हे  
कोदा व्हे घणो वपटाचार आत्म वखाण  
वणीज रो मजो चखायोग्यो व्हे

अवे गुन्नीसवी सदी आरम्भ घटी  
 कुरवाणी कथा एक वदरद वयान  
 कविया रा पण ई सुकरत वजणाने वी  
 करता रै व्है सविवेक सजान

मेवाड महीपति महाराणा भीमसिंघ  
 भखर बडाहीज सवाभिमानी हा  
 वणा रो राजकुमारी किसणा भाव पण  
 बढ चढ कडा हीज वी बलिदानी हा

नख-सिख तक सागोपाग सुदरी  
 वा जोबन ती जद मत मस्त भई  
 बहु दिस मे सोहरत फैलगी  
 पाणी गरहण हित लालायित हा राजवस कई

राणा रा डूब्या घणा सोच मे कु बरी नै  
 किण राजवस मे देख  
 उत्तम कुल मे या पुग जावै तो  
 सुख चैन रो भू निदिद्या लेऊ

सौंदर्य लावण्य नै मधुरम माधुर्य तो  
 बिण रा अग-अग ती चूता हा  
 अगा रो सौष्ठव सरज लै सगार तो  
 वी मन मुनिजण रा भी छू ता हा

दन्त शुति विण रो उजवल होरव  
 बणावली सरीखी दमकती ही  
 नै नयणा रो ज्योति पण चारु चदर  
 किरणावली सरीखी चमकती ही

होठा री छवि गुलाबी गुल गुलाब  
ताजा पाखडिया री याद देवाती ही

अरे बरगो पै तो सुन्दरता स्वय हीज  
जै बलिहारी वारि जाती ही

केस रासि कमर सु नीचे वा सावण री  
स्याम घटा सो गहराती ही

या यू कंदा के वा रूपरासि बरगो मे  
ललित ललाम छटा सी लहराती ही

कटि बरिग री केहरी सी वा तो  
मद भरी धन मस्तानी ही

स्व स्थल समय री चरम सुन्दरी  
पण मन वा घणी मरदानी ही

गति गजणी सम दरग मरग सा कमनीय  
कजराला वा कमलणी सी मन लुभाणी ही

भीवा कबाण सी दरस्थि यद मिल जाय तो  
वा तत्क्षण बाण विधाणी ही

यो रूप रग अरुण मुख अनुपम उरवसी  
वा जोवन ती गरव गदरानी ही

रणवाका राठौरा सु सम्बन्ध जोधपुरेस्वर  
या राजसरी अपणाणी ही

पण हन्त दुरदेववस वी राजपुरुस तो  
अकस्मात हीज जद देहान्त वियो

तो जोधपुर सु उत्तराधिकारी भ्रात सग हीज  
यो सम्बन्ध रखण सदेसो निस्णान्त वियो

वआढी जैपुर राजवस जद इण  
दुरघटणा रो ज्ञान वियो  
तो विण री तरफ सु पण क्रिसणा  
स्व कुल वरण अरमान वियो

काल कवलित हो भुगल हकुमत अवे  
भुगत जैपुरी घणा सबल मानी हा  
भेज दियो टाक पीण्डारी अमीर खा पण  
इरादा हीज परवल अभियानी हा

यैआढी जोघपुरेस्वर ससौय कयो  
क्रिसणा तो अवै म्हाणीज कुलविभा है  
अणीज कुल या रैवेली या तो अवै  
अणीज कुल रो सु सुहावणी सोभा है

पण जोघपुर सु सन्देसो पुगवा पैला  
तितक जैपुर भेज दोदो राणा जो याईज भूल  
रग मे इज सब भग व्हीई यो नै वात या  
पकड जवरदस्त हीज एक तूल गई

ही जा वात अणी तरैरी वा तो अवै  
वतगड वण नै रै ई गी  
नी मानो ता दा मेवाड उजाड रवा री  
धमकी ती वात ठणी नै रैईगी

मरैठा सरदार दौलतराव सिन्धिया आई समझाया  
जैपुर मेवाडी गरिमा रें तो जोगनी  
वी भुगला रा मनसबदार मेवाड री महाराणा  
महिमा सम तो आच्छो यो सुयोग नी

पण जेपुर जाघपुर ता आपस में ईज

उलभ पड्या रण घमासाण मच्यो

रजपूतो नर मुण्ड लुडक पड्या सुख चेन  
हो नी कणी रो पण वन्च्यो

तद व्हे राणा आकुल समस्या पै  
स्वकुल मे सोच विचार कीदो  
क्रिसणा भी हो वणी मे सामल वणी पण  
सोच नै आपणो विचार दीदो

वणीज आपणी वलि रो परस्ताव कीदो  
वा मरवा नै तयार व्हेई  
राजकुला मे कन्या तो जनमता ही मरै अबे  
वा पण योईज करवाने तयार व्हेई

घणा लाड प्यार जी पारी पौसी कतरा कस्ट  
वात्सलय ती बडो कीदा  
कई सिसोदियो रगत नी अणा रग मे  
बस फकर कीदो तो यो ईज कडो कीदो

तद हत्या हित एक कुटम्बी जन नै ईज  
यो आदेस दियो गयो  
पण विण रा तो हाथ पग ही फूल्या  
वरछे पण साथ नी हो दियो

अबे विने एक विस पण दियो गयो  
जो व्हे उलटी नै निवल गयो  
विडम्बणा हीज एक वणी कुवगत मे  
कद कुण कणी रो हो साथ दियो



फैर एक घोर विप प्याली भरी गई  
जिने पी क्रिसणा खोई  
हलाहल होज हो ऊ तो जिने पी  
वा राजकुमारी सोई

पी प्याली नै वा भोरी कु बरो तो असी  
खोई के फैर वा नी उठ सकी  
आपणी कुल सकट सु उबार दीदो  
नै फैर वा कदी नी उठ सकी

जद देख्यो राणी मा त्रिसणा रो सच  
तो व्है करण क्रन्दनघार वही  
राणा भीम रो वजर सोने पण करणा ही  
कट उर होज कटार सही

मा ममता क्रिसणा सरज अवे तो  
अरथी होज रो सगार बणी  
लख विलख ने मा रोई कई म्हे  
इने अणीज ही कार जणी

सतरु रो रगत व्हैवावा वारो राणो  
अस्त्रा री घार व्हैवावतो जातो हो  
नै ऊ बैना रो भाई पण विन बहना  
वेबस बिलखावतो जातो हो

काप उट्या हा घरा अम्बर पण  
विण दन भरत्यु रा इण डेरा सु  
जल थल नभ चर सगला रोया हा  
निरदय भरत्यु रा इण फेरा सु

नै जद यो सुणियो उदैपुर नगरो तो  
विण मे पण एक हाहाकार उठी  
बजार गरी चौहटा सहरो सब जगा  
विण दन करुणा व्हेई साकार उठी

अरे परवाण चढी ही क्रिसणा अवे तो  
वा परजाई जावा वारी ही  
अरमावा ती वा तो उडती ही विणरी तो  
छवि होज अरुणाई स्यान वारी ही

क्रिसणा थारी या कुरवाणी तो राजपूतोज  
एक आण केवा व्हे है  
कुमारी कन्या गरिमा तो थने आज पण  
सरघा रा सुमन चढा व्हे है

भारत री ललनवा असा तो घणा खरा  
आतम बलिदान कीदा  
आपणा कुल गौरव री रक्षा खातर वणा  
वई नी हा अनुदान दीदा

ना मालूम का कवि रो या लेखणी  
इतिहासा मे व्है जावै है  
नै आपणी नोक सु या असी  
करुणा चित्कारा पण कै जावै है

क्रिसणा कुरवाणी रो तो याईज एक  
करुणा करण है कहानी  
दारुण दरद भरी अतिव या तो है  
निस्पृही निभय नै जुवानी

नटणी री हत्या



हर कलित कला मरम वेता मन कवि  
एक करुणा रो धार जगावणी चावै है  
या मानवता अतीत सू घणी दुखियारी  
वी अणीज रो प्यार जगावणो चावै है

अणी वसुन्धरा पै अगणत कलाधर  
मानव मन धरा री प्यास बुझावता हा  
आपणा अजब अनोखा अद्बुध कला  
सौन्दर्य ती आपणी रोटी आप चलावता हा

नटणी चबूतरो या यादगार तो उदैपुर  
पीछोला भील मे वणाईगी है  
पण व्यो यो तो घोर अन्याय जघन्य अत्याचार  
वणीज रो सरम भोम भीटाईगी है

मेवाड रा इतिहास गौरव केण्या अनन्त  
वणा री कई कमी नी है  
पण नटणी हत्या री कलक केणी जाणकारा नै  
कम वणी री गमी नी है

राणा स्वरूपसिंघजी अणीज पीछोला भील  
जगनिवास रा वरन्दावन मेला मे रेवता हा  
वणा रा घणा अनोखा ठाट पाट पूरवजा रा पुण्य फल  
होज वो ठाट यू चखता हा

अठईज व्ही रगणा नटणी रो हत्या ऊ तो  
इतिहास हीज छिपायो जावै है  
उपेक्षा होज वही पणी रो तो सिरफ गरव  
गौरव रो ईज बिछायो जावै है

कैलासपुरी वासो रगणा सरवाग सुन्दरी  
विण रो धन मस्त जवानी ही  
पिता भहेसर परसाद रो या नयन तारा  
भदभरो नै धन मस्तानी ही

नाच गान कला निपूण अणी फन मे तो  
वा मेहतमानी ही  
आवणा पिता रोज या सिस्पा चाल ढाल ती  
लागती घणी समयानी ही

अणीज कला सौन्दय ती वा असुनीय धन  
कस कमर कमावती ही  
आछा आछा सेठ साहूकार राजा माराजा  
वा घणा माट रिभावती ही

परदेसी सेठ साहूकारा रो तो कैलासपुरी मे  
घणी भीड जमी रेवती ही  
रतन आभूसण मुदरा रो वरखा  
पण्डा पुजारिया रो पण घणी रेवती ही

चमण नट पुत्रती व्यो विण रो रिस्तो  
 व्याव री वात पण पूरी पक्की ही  
 दोयारा हरदा जुडया थका वरति  
 या नरत गाण कला हीज नक्की हो

यो तो म्हारी तरफ एक टक निरखे  
 म्हू काम जरा नी करी पाऊ हू  
 जद जद यो म्हारी तरफ देखे  
 म्हू तो ध्यान हीज चुकी जाऊ हू

वणीज दुप हरण सुत बासरी वादक चमण  
 तलवार ती वेई व्यो विण रो सेहजो  
 जणी आपणी आखा छेद विण प्यार नै  
 पुरी तरा हीज हो सेहज्यो

विण रा दण कला सौंदर्य रो चारा तरफ  
 हो घणो चरचो  
 हर घनिक हो लालायित फेर चावे व्हेई  
 जाग्रो कतरोई खरचो

रगणा रो नाच गाण देखण सारू उदैपुर  
 वरन्दावन महला सु पण बुलावो आयो  
 दल समेत नटराज महेसर परसाद पोंछया  
 दल करतब आपणी दिखायो

ढोलक री ठम ठम पै रगणा तरै तरै रा  
 नाच वताया हा  
 देख जणा नै हर दरसक रा मन मे  
 नया रग छितराया हा



सात फीट ऊचा रस्सा पै चढ फेर वणी  
आपणो नाच बतायो हो  
देख विने तो राणो पण रिझ्यो भील पार  
जा आणो देखण हित ललचायो हो

खुद स्वरूपसिध बहुमूल्य मोती कण्ठो  
रगणा नै पहनायो हो  
मेला सु भील पार जा लौट आणो  
दिखावा सारु फुलसायो हो

यद यो कर बतावे तो उदैपुर आधो थू  
पट्टा मे पा जावेली  
कयो रगणा कानी कर बतावे जद वा  
आधो उदैपुर पट्टा मे पावेली

आगला दन महला ती भील पार  
मंदर तक रस्सी बन्धवाई जाव  
जिए पे नाच रगणा द्वारा आपणी  
करा विकट रूप दिखाई जावै

देख यो करतब ऊ राणा रो नीज मंत्री  
जगमन्तसिध घवरायो

आधो उदैपुर अपात्र रे हाथ चल्यो जावै  
योईज सोच नै ऊ विचलायो

सोच विचार नै इए विकट नजारा सु  
ऊ आपणेज आप डूब रियो हो  
राणा री इए फरियाद दिली सु ऊ दिल  
आपणा मसौस सूब रियो हो

पछे आघो उदैपुर विण अधिकारी नै  
अभिवादन पण नी करावेला  
मुजरा नजराणा सब कम पड जावेला  
नै नयो लगाम हीज कोई लगावेला

भील पार जा जद रगणा आघा सु ज्यादा  
सकुसल ध्यान सु लौट नै आती ही  
दिल डूब्ये विण जगमन्तसिंघ तजवार सु  
वा रस्सो हीज कटवा दी ही

नै फेर एक तगडो हा हा कार उठी  
राणा नै पण विण रो अवभाण वियो  
घनघोर नीच करम सू उत्पन्न शरमिन्दगी  
रो पण वणा नै अवज्ञाण वियो

मान लिदो राणा रगणा रो ऊ करतब  
वा सकुसल खेम लौट नै आवणी ही  
अबे आघो उदैपुर विण रा वस घर पावै  
वात भुण्डा सु तो माईज वखाणी ही

गोता खोर तैराक दल भील तलासी  
पण वा नटणी कठई नी मिल पाई ही  
आगली सवेर वणी री लास तैरती मजर  
अविचल निश्चल आई ही

पण अणी अपराध करम री सजा किने ई  
पण नी दिलवाई गी ही

केवल थोथी लापरली बाता कोरी  
सहानुभूति हीज बताई गी ही

अवे नटराज महेसर परसाद पट्टा री  
दलील-लेवा बुलाया जावै  
पण बईमाना री वकसीस लेवा ती तो  
वी साफ साफ मना करा जावै

वकसीस तो कई अवे कोई नट उदैपुर रो  
पाणी पण नी पो पावे ना  
चल्या जावेला अणीज वगत फेर लौट नै  
पाछा वी कदी नी आवैला

तद सु आज तक वी कुल रा कोई नट  
उदैपुर कानि नी लौट नै आया है  
फेर चाहे कोई कलाघर पेरिस लन्दन  
सिकागो मास्को तो फेर भी व्हे आया है

धणो करुर मजाक करायो राणा रा मुण्डा  
वणा अभागा असहाय निरबल सू  
विचारां रो सब कुछ लूट ग्यो अणी  
कूट विकट विराला छल बल सू

मीरा, क्रिसणा, रगणा जसा अभिसाप वो  
राजसिंघासन पण काल समुदर डूब गयो  
या कै कणी परवण सवेदणा वाणी रो  
रस भरपूर पी नै या रुदर खूब गयो

करुण कथा सुण ऊ आन्धा चमण रो  
आरतनाद कैलासपुरी सु उदैपुर आयो  
आपणी पिरया री निरमम हत्या सु विण रो  
अतर मन जा विण भील पं छायो

जिए सु पीछालो पण दहल उठियो

जल थल नम सब आछन विया

राणा कुल रा अमित गौरव पण अवे बी

कुछ तो भी हा अवछिन्न विया

पीछोला री सतह पे रोस अभिमान क्षीम

वेदना री लहर उफण री ही

राणा रो हरदो व्यो घणो विदरावित

आतम अभिमान मे व्हे घूटना री ही

घटना या घणो पुराणी नी पण यो व्यस्त

जमानो बिने भूल गियो

पण नटा रा इतिहास मे यो हादसो

पकड जबरदस्त एक तूल गियो

नट भाट तिलक चान्द यो हादसो कथ

बणीज वगत छन्दा मे सजोयो हो

सवेदणा केणी आज पण कैई जावै

सवारथ रा आधा यो बिण रो बीज बोयो हो

अबे पण चमणा वा अतरपत आत्मा कदी कदी

अमावस राते बणी भील मे चित्कार लगावै है

जा वरन्दावन प्रासाद ठहरावा वारा रा कारजा

कप कपा नै चली पण जावै है

उदैपुर राज अतिथि साला वणा निरदोस

नटा रो घणो अपमान बियो

राणा वस रा अपरिमित वैभव पण सब रे मन

यो घणो घोर सन्ताप बियो

फेर राणा वस वरन्दावन महल तज पीछोला  
 तट महला मे आवास कीदो  
 नै वटैज विण नटणी री यादगार मे  
 एक चवूतरो बणा आवाद कीदो

हत रगणा री याईज यादगार अवे नटणी  
 रो चवूतरो कै ब्हावै है  
 जो भरस्ट सत्ता धन भोग लिप्सा सुखस्यान  
 लालसा एक सास्वत केणी कै जावै है

निस्पृही निर्भय वा वणा दुरदान्त दस्यु  
 वरिन्दा री कुत्सित याद बदसार दैवावै है  
 सहरद काव्य कला मरमज्ञ रसिक पाठक  
 वा एक करुणा रीजधार जगावै है

( या कथा प्रसिद्ध बगला साहित्यकार विमल मिश्र री रचण  
 स्त्री ' पर आधारित है । )

हिन्दवारणी सूरणी नारिया



जगती मे बिण भीसाल ई  
हिन्दवाणी सूरानी नारिया  
जाणी सुणी नी आज तक इण री सी  
जी, जा निसारिया

आभरण पपा बी पहणती ही करती ही  
सगार भी  
पण कमर वणा रे कसी रही तीखी  
हरदम कटारिया

पप्पा करुणा या पप्पा सरोखी और  
कठई भीसाल है  
गैरत पे जी मर मिटी गजब वणा री  
गुमानिया



किरणा री याद आई जावे मीना बजार  
रे मायने

छदम अकबर री छाती चढ बैठी कटार रे ही  
दो धारिया

दुरगा या लक्ष्मी रो पण और कठई  
जवाब है

दुस्मण सु भीडोगी दे दी ही  
खुद री कुरबाणिया

अवाणज री ई वाता घटी चित्तौड  
आद मे

जौहर री चिता कूद पडी सैकडा  
हजारा नारिया





